दुर्गा चालीसा लिखित में

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥ 1

निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥ 2

शशि ललाट मुख महाविशाला । नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥ 3

रूप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुख पावे ॥ ४

तुम संसार शक्ति लै कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥ 5

अन्नपूर्णा हुई जग माता । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥ 6

प्रलयकाल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥ 7

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें । ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥ ८

रूप सरस्वती का तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥ 9

धरा रूप नरसिंह को अम्बा । प्रगट भई फाड़ कै खम्बा ॥ 10

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो । हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ॥ 11

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ॥ १२

क्षीरसिन्धु में करत विलासा । दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥ 13

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ॥ 14

मातंगी धूमावति माता । भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥ 15

श्री भैरव तारा जग तारिणी । छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ॥ १६

केहरि वाहन सोह भवानी । लांगुर वीर चलत अगवानी ॥ 17

कर में खप्पर खड्ग विराजै । जाको देख काल डर भाजै ॥ 18

सोहै अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥ 19

नगरकोटि में तुम्हीं विराजत । तिहूँ लोक में डंका बाजत ॥ २०

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रक्तबीज शंखन संहारे ॥ 21

महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥ 22

रूप कराल कालिका धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥ 23

परी भीड़ सन्तन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ॥ २४

अमरपुरी अरु बासव लोका । तब महिमा सब कहें अशोका ॥ 25

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नरनारी ॥ 26

प्रेम भक्ति से जो यश गावें । दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें ॥ 27

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ते सो छुटि जाई ॥ २८

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥ 29

शंकर आचारज तप कीनो । काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ॥ 30

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥ 31

शक्ति रूप का मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछतायो ॥ 32

शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥ 33

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥ 34

मोको मातु कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥ 35

आशा तृष्णा निपट सतावें । रिपु मूरख मोहि अति दर पावें ॥ 36

शत्रु नाश कीजै महारानी । सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥ 37

करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धिसिद्धि दै करहु निहाला ॥ 38

जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ । तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ ॥ 39

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै । सब सुख भोग परमपद पावै ॥ 40

देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥ 41

॥दोहा॥

शरणागत रक्षा करे, भक्त रहे निःशंक ।

मैं आया तेरी शरण में, मातु लिजिये अंक ॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा ॥

---- Bhaktikatha.com-----